प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त, 2023
प्रेषण तिथि : 19 अगस्त, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 11 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

तर्कशील और प्रयोगवादी व्यक्तित्व के धनी थे नारायण सिंह जीः संरक्षक श्री

(देशभर में उत्साह से मनाई तृतीय संघप्रमुख श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा की जयंती)

पूज्य श्री तनसिंह जी की छत्रछाया में नारायण सिंह जी ने जो पाया उसकी भूमिका बीकानेर से प्रारंभ होती है, क्योंकि उस समय वे बीकानेर में ही अध्यनरत थे जब वे संघ के संपर्क में आए। नारायण सिंह जी सदैव तर्कसंगत बात ही किया करते थे। जो बुद्धि के घेरे में नहीं आए, उसको वे स्वीकार नहीं करते थे। मैंने 1961 में तनसिंह जी के साथ एक शिविर में पहली बार उनको देखा। मेरे जयपुर में रहते हुए नारायण सिंह जी से मेरा मेलजोल बढ़ा। उस समय वे संघशक्ति के संपादक थे। वे प्रयोगवादी थे। उन्होंने अनेक प्रयोग करके पूज्य श्री तनसिंह जी की बताई बातों का परीक्षण किया और अपने विश्वास को दृढ़तर बनाते रहे। 'चाहे एक ही जले' गीत पूज्य तनसिंह जी ने नारायण सिंह जी के लिए ही लिखा था। उस गीत में जैसे तनसिंह जी ने भाव व्यक्त किए हैं, नारायण सिंह जी ने अपना जीवन वैसा ही बनाया। उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने बीकानेर स्थित बीदासर हाऊस में 30 जुलाई को आयोजित श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि तनसिंह जी के देहांत के बाद नारायण सिंह जी ने संघ को छोड़ने का निर्णय कर लिया था। उस समय वे संघ प्रमुख भी थे। ऐसे में सभी ने उनसे कहा कि आपके बिना तो संघ आश्रयहीन हो जाएगा, अतः आप ऐसा न करें। पूज्य तनसिंह जी के देहावसान के बाद के 12 दिनों के दौरान की ही यह बात है। जैसे ही 12 दिन पूरे हुए, नारायण सिंह जी पूज्य श्री तनसिंह जी की तपस्थली चौहटन की पहाड़ी पर स्थित वैर माता के थान पर चले गए और लगभग एक महीने तक वहीं रहे। उनमें जो योग की प्रक्रिया घटी, उसका मैं प्रत्यक्षदर्शी हूं, लेकिन उसके बारे में शब्दों से वर्णन नहीं किया जा सकता। कोई सहज रूप में उस पर विश्वास भी नहीं कर सकता। वे अप्रकट ही थे और अप्रकट ही चले गए। मुझे भी कुछ सूत्र उन्होंने बताए जिनको पकड़कर मैंने संघ को संभाला। नारायण सिंह जी ने सदैव यही कहा कि संघ का कार्य करते-करते ही उन्हें यौगिक उपलब्धियां मिलीं, उन्होंने कोई अलग से प्रयास इसके लिए नहीं किया। हम भी अनन्य भाव से संघ कार्य करते रहें तो हम भी अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। (शेष पृष्ठ 2 पर)

निरंतर जारी है युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का सिंचन

(छह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों में 1000 से अधिक शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण)

नांदड़ी

अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा समाज की युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण का कार्य निरंतर जारी है। इसी क्रम में 27 जुलाई से 9 अगस्त की अवधि में विभिन्न स्थानों पर एक बालिका शिविर सहित छह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए जिनमें 1000 से अधिक शिविरार्थियों ने संघ का प्रारंभिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पाली प्रांत में बाली (मांडा) स्थित अलखजी महाराज मंदिर के प्रांगण में 28 से 31 जुलाई तक एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने किया। उन्होंने शिविर के प्रथम दिन शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संघ का मुख्य उद्देश्य युवाओं में संस्कार निर्माण करना और उनमें राष्ट्रप्रेम जगाना है। इसलिए हमको क्षात्रधर्म पालन का अभ्यास इस शिविर में कराया जायेगा। हमें सजग रहकर इस सामूहिक संस्कारमयी कार्यप्रणाली के मर्म को समझना होगा तभी हम पूज्य तनसिंह जी के संदेश को समझ सकेंगे और उसके अनुरूप अपना जीवन बना सकेंगे। उन्होंने विदाई के समय शिविरार्थियों से कहा कि आप अपने जीवन की महत्ता को समझें, संघ द्वारा दिए दायित्व की गंभीरता को समझें, पूज्य तनसिंह जी के स्वप्न को समझें और यहां से जाने के बाद उसी के अनुरूप अपना आचरण बनाएं। शिविर में बाली, मांडा, मारवाड़ जंक्शन, सरवाड़, निम्बली, भोजावास, बिठुडा कल्ला, बातां, बासनी, खारिया सोढा, भैसाणा, सिसरवादा, सारंगवास, बगड़ी नगर, गुडा बिजा, शिवपुरा, दुधोड़, केरखेडा, गुडा श्यामा आदि गांवों के 215 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। (शेष पृष्ठ 6 पर)

केसरीदेव सिंह झाला बने राज्यसभा सांसद

गुजरात के मोरबी जिले में आने वाली वांकानेर रियासत के पूर्व राजपरिवार के सदस्य केसरीदेव सिंह झाला राज्यसभा में गुजरात से सांसद चुने गए हैं। 29 जुलाई को सांसद बनने वाले झाला भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर निर्विरोध चुने गये हैं। वे दिवंगत कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय पर्यावरण मंत्री दिग्विजयसिंह झाला के पुत्र हैं।

तर्कशील और प्रयोगवादी व्यक्तित्व के धनी थे नारायण सिंह जी: संरक्षक श्री

अवाणिया

(पेज एक से लगातार)

वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने श्रद्धेय नारायण सिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए और कहा कि ऐसे महापुरुषों को हम सही रूप में तभी जान सकते हैं जब हम स्वयं भी उनके स्तर तक पहुंच सके। राजस्थान सरकार में राज्यमंत्री भंवर सिंह भाटी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर ने कार्यक्रम का संचालन किया। 30 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघ प्रमुख पूज्य नारायण सिंह जी रेड़ा की 83वीं जयंती पर देशभर में कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। जयपुर में संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि नारायण सिंह जी का सारा जीवन एक आदर्श स्वयंसेवक के जैसा रहा। बीकानेर में रहते हुए हम साथ में शाखा में जाते थे। शाखा में तो हम सभी गंभीर रहते थे लेकिन शाखा के बाद हमारे जीवन में उच्छृंखलता आ ही जाती थी, लेकिन नारायण सिंह जी सदैव गंभीर रहते थे। उनका चिंतन ही दूसरा था। वे यही चिंतन करते थे कि मेरे जीवन में कोई कमी ना रह जाए। उनकी इस गंभीरता का हम पर भी प्रभाव पड़ता था। नारायण सिंह जी का चिंतन गहरा और सकारात्मक था, इसी कारण वे धीरे-धीरे इस मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहे। 1959 के हल्दीघाटी शिविर में नारायण सिंह जी ने पूज्य तनसिंह जी के साथ रहने का निर्णय कर लिया। उन्होंने अपनी अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और तनसिंह जी के साथ रहने लग गए। उस कच्ची उम्र में भी नारायण सिंह जी में यह समझ थी कि उनका कल्याण कहां है। वे सदैव अपने आपको देखते हुए स्वयं को निर्मल बनाने की प्रक्रिया में संलग्न रहते थे। इसी कारण उनके व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि सभी उनका सान्निध्य पाने को तरसते थे। उन्होंने बताया कि पूज्य तनसिंह जी के देहावसान के बाद उनमें जो आध्यात्मिक जागरण हुआ उस समय उनको कई प्रकार की कठिन शारीरिक व मानसिक स्थितियों से गुजरना पड़ा। इन परिस्थितियों को सहते हुए वे आगे बढ़ते रहे। नारायण सिंह जी हमको जो प्रेरणा देकर गए उसने संघ को एक परिवार के रूप में जोड़ने का काम किया। पूज्य तनसिंह जी ने जो कुछ दिया उसको व्यावहारिक रूप से हमारे जीवन में, हमारे अनुभव में ढालने में नारायण सिंह जी ने सहारा दिया। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे प्रेरक नारायण सिंह जी अनन्यता के भाव के प्रतीक हैं। अभी हमने गीत सुना - 'चाहे एक ही जले, पूरे स्नेह से जले,

मुंबई

बाली

टापरा

पुणे

दिल्ली

पायली

तारानगर

ऐसे दीप चाहिए।' ऐसे दीप बहुत कम होते हैं जो पूरे स्नेह से अर्थात् अनन्य भाव से जलते हैं। हम दीपावली पर या अन्यान्य अवसरों पर अनेक दीप जलाते हैं लेकिन उनमें से सभी दीप एक समान नहीं जलते। कुछ ही दीपक ऐसे होते हैं जो अंत तक जलते हैं। चाहे किसी भी प्रकार का विघ्न आ जाए, तूफान आ जाए फिर भी वे बुझते नहीं है। नारायण सिंह जी के जीवन पर यदि हम चिंतन करें, मनन करें तो पाएंगे कि उनका जीवन भी उस दीपक की भांति रहा है जो पूरे स्नेह से जलता है, जिसकी लौ किसी भी परिस्थिति में कंपकंपाती नहीं है। 1940 में नारायण सिंह जी का जन्म हुआ। साधारण गांव के साधारण परिवार में जन्म लेकर, साधारण परिस्थितियों में रहकर भी उन्होंने अपने जीवन को असाधारण बना लिया। मनुष्य जीवन एक दुर्लभ अवसर है, उसमें भी क्षत्रिय कुल में हमें जन्म मिला है, जो और भी दुर्लभ है। इसकी कीमत को समझकर ही इस अवसर का लाभ उठाया जा सकता है। नारायण सिंह जी ने अपने सामने आए प्रत्येक अवसर का सदुपयोग किया, उसे व्यर्थ नहीं जाने दिया। चाहे वह 9 वर्ष की आयु में प्रारंभिक रूप से संघ में आना हो, चाहे 19 वर्ष की आयु में तनसिंह जी के साथ रहने का निर्णय लेना हो, चाहे 29 वर्ष की आयु में तनसिंह जी के सान्निध्य में संघप्रमुख का दायित्व संभालना हो या 39 वर्ष की आयु में तनसिंह जी के देहावसान के बाद स्वतंत्र रूप से संघ को संभालना हो, उन्होंने किसी अवसर को अपने हाथ से जाने नहीं दिया। इसीलिए उनका जीवन असाधारण बना। हम अपने जीवन को देखें और विचार करें कि हमारे सामने इस प्रकार के कितने अवसर आते हैं और हम उनका कितना लाभ उठा पाते हैं। हम अवसरों को खोते जाते हैं, इसीलिए हमारा जीवन साधारण बना रहता है। श्रद्धेय नारायण सिंह जी के जीवन से हम प्रेरणा लें और अपने सामने आने वाले प्रत्येक अवसर का सदुपयोग करना प्रारंभ कर दें तो यही सच्चे रूप में उनकी जयंती मनाना होगा। कार्यक्रम में जयपुर शहर में रहने वाले समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए। नई दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित नेहरू पार्क में सम्राट अशोक शाखा द्वारा भी जयंती मनाई गई। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह महरोली ने श्री रेड़ा के साथ बिताए सांघिक जीवन के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि नारायण सिंह जी ने अपने आप को संघ तथा पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रति पूर्णतः समर्पित किया जिसके फलस्वरूप उन्होंने अध्यात्म की उच्चतम अनुभूतियों की प्राप्ति की। हम सभी लोग निरंतर संघ के संपर्क में रहें ताकि इस पवित्र मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा बनी रहे। कार्यक्रम में दिल्ली में निवासरत राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, बिहार आदि विभिन्न राज्यों के बन्धु उपस्थित रहें। महेन्द्र सिंह सेखाला व भूपेंद्र सिंह गरनिया ने भी अपने विचार रखे। (शेष पृष्ठ 7 पर)

जाखड़ी

गेडाप

धंधुका

जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखाओं का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त अजमेर प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन रावला दरवाजा, अजगरी में 6 अगस्त को किया गया। किशोर सिंह देवलिया द्वारा सामूहिक यज्ञ करवाया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवान सिंह देवगांव द्वारा दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी दी गई। समारोह में अजमेर प्रांत से अधिकतम संख्या में उपस्थिति व शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में प्रांत में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। शाखा में उपस्थित बंधुओं को जन्म शताब्दी वर्ष पताका व संघ साहित्य उपलब्ध करवाया गया। कार्यक्रम में पृथ्वी सिंह सापुण्दा, राजेन्द्र सिंह अजगरी, नरेंद्र सिंह डोराई, गोविंद सिंह अजगरी सहित अन्य सहयोगी जन उपस्थित रहे। 6 अगस्त को ही चितौड़गढ़ में आसावरा माताजी में सांवलिया जी चौराहा स्थित कृष्णा ऑटोमोबाइल परिसर में भी विशेष शाखा का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि पहले स्वयं पर शासन करें, फिर दूसरों पर शासन की बात करें। पहले क्षत्रिय

मार्गदर्शक थे, लेकिन आज उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ रही है। पुनः वही गौरवपूर्ण स्थित प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम अनुशासित हों, संगठित हों। कार्यक्रम के दौरान श्रीकृष्णा ऑटोमोबाइल प्रतिष्ठान का उद्घाटन भी किया गया। प्रतिष्ठान के महेंद्र सिंह, हिम्मत सिंह चरपोटिया द्वारा सभी का स्वागत किया गया। 13 अगस्त को श्री भवानी क्षत्रिय धर्मशाला, आसावरा माताजी में आयोजित होने वाले 'राष्ट्रनायक वीर दुगार्दास जयंती' कार्यक्रम पर भी चर्चा की गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी दिन श्री राम जानकी मंदिर, बांसा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया, साथ ही दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी समारोह हेतु सभी को निमंत्रित भी किया। राजसमंद जिले के देलवाड़ा क्षेत्र के कालीवास गांव में नीम चौक पर भी विशेष शाखा का आयोजन हुआ। संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने सभी को दिल्ली में होने वाले समारोह में आने का निवेदन किया। मोहब्बत सिंह भैंसाणा, शूरवीर सिंह सोडावास व अन्य सहयोगी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

दिल्ली एनसीआर व उत्तर प्रदेश के साठा चौरासी क्षेत्र में संपर्क अभियान

दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 28 जनवरी 2024 को आयोजित होने जा रहे पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह हेतु राजस्थान के जालौर व बालोतरा संभाग से स्वयंसेवकों के दल द्वारा 27 से 31 जुलाई तक दिल्ली एनसीआर और उत्तर प्रदेश के साठा चौरासी क्षेत्र में गहन संपर्क किया गया। प्रथम दिन गाजियाबाद और वैशाली क्षेत्र में संपर्क किया गया। यात्रा के अगले चरण में साठा चौरासी क्षेत्र के मतनावाली, छज्जुपुर, चचोई, बिगेपुर आदि गांवों में बैठक आयोजित की गई जिसमें स्थानीय समाजबंधुओं को जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी देते हुए क्षेत्र से अधिकतम संख्या में पहुंचने पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है कि पश्चिमी उत्तरप्रदेश में सिसोदिया राजपूतों के 60 गांव और तंवर राजपूतों के 84 गांवों के समूह को संयुक्त रूप से यह क्षेत्र साठा चौरासी क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इस राजपूत बहुल क्षेत्र को 'लघु मेवाड़' के नाम से भी जाना जाता है। क्षेत्र के आलमपुर, सपनावत, समाना, कलौंदा, जारचा आदि गांवों में भी

संपर्क किया गया। बुलंदशहर क्षेत्र के पहासू और टिटोहा क्षेत्र में भी संपर्क किया गया। सहारनपुर क्षेत्र में भी संपर्क किया गया। जालौर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी, बालोतरा संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाडी, दिल्ली एनसीआर प्रांत प्रमुख रेवत सिंह धीरा, गणपत सिंह भवरानी, भेरूपाल सिंह दासपां, वीर बहादुर सिंह असाड़ा आदि सहयोगियों ने तीन अलग-अलग दल बनाकर संपर्क किया। स्थानीय सहयोगी के रूप में रमेश राघव, धर्मेंद्र सिंह पंवार, राजीव सिंह, गंगा सिंह काठाडी व बृजेश सिंह राणा विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क के दौरान साथ रहे।

साणंद में 15वां विद्यार्थी सम्मान समारोह संपन्न

गुजरात में साणंद स्थित नगरपालिका हॉल में श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद के तत्वावधान में 15वां विद्यार्थी सम्मान समारोह 6 अगस्त को आयोजित हुआ। साणंद शहर एवं तहसील के अंतर्गत आने वाले गांवों के राजपूत विद्यार्थियों को प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से श्री राजपूत विकास ट्रस्ट द्वारा लगातार पिछले 14 वर्ष से यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जयराज सिंह वाणा, आईपीएस (पुलिस उपायुक्त, SOG अहमदाबाद शहर) ने विद्यार्थियों से कहा कि हमारी सफलता हमारे द्वारा किए जाने वाले संघर्ष पर निर्भर करती है, इसलिए आपको भी संघर्ष करते रहना चाहिए। जीवन में कभी भी कठिनाइयों को देखकर हताश नही होना चाहिए क्योंकि संघर्ष से ही जीवन का विकास होता है। तृप्तिबा मेघदीपसिंह राओल (प्रमुख श्री गुजरात राज्य राजपूत संस्था संकलन समिति, महिला संगठन) ने कहा कि हमारा इतिहास गौरव पूर्ण था पर आज के इस युग में हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं संस्कारों पर आक्रमण का सामना करना पड़ रहा है। हमें जागरूक और संगठित होकर हमारे इतिहास और संस्कृति

की रक्षा करनी होगी। साणंद के अग्रणी उद्यमी दिलीप सिंह सिसोदिया ने कहा कि कितना भी संघर्ष करना पड़े, हमें अपने उद्देश्य की ओर बिना निराश हुए बढ़ते रहना चाहिए। अनुशासन और दृढ़ता से लक्ष्य की प्राप्ति जरूर होती है। साणंद में कार्यरत डॉ देवेंद्र सिंह झाला ने भी अपने अनुभव सुनाकर विद्यार्थियों को सकारात्मक रहने की बात कही। कार्यक्रम में कुल 115 बालकों व बालिकाओं को सम्मानित किया गया। श्री राजपूत विकास ट्रस्ट के प्रमुख अनिल सिंह गोधावी ने सभी का शाब्दिक स्वागत किया। ट्रस्ट के मंत्री नवलसिंह पींपण ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन भानु विजय सिंह एवं गजेंद्र सिंह ने किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

मोरबी में राजपूत समाज सरस्वती सम्मान समारोह का आयोजन

गुजरात के मोरबी जिले में राजपूत समाज का सरस्वती सम्मान समारोह 30 जुलाई को आयोजित हुआ जिसमें कक्षा 5 से स्नातक तक उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राजपूत समाज के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। मोरबी जिला राजपूत समाज के तत्वावधान में पिछले 51 वर्ष से निरंतर इस समारोह का आयोजन किया जा रहा है। राज्यसभा सांसद केसरीदेव सिंह झाला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले 51 वर्षों से लगातार क्षत्रिय समाज द्वारा यह आयोजन किया जाना अनूठी बात है। यह हमारे सामाजिक भाव का प्रमाण है। हमारा क्षत्रिय समाज शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान रखने वाला समाज है। आज के समय में हमें जिन विषयों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, वे हैं - संगठन, शिक्षण और व्यसन मुक्ति। हम सब को मिलकर इन क्षेत्रों में समाज को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। गुजरात सरकार के पूर्व गृह मंत्री प्रदीप सिंह जाडेजा ने कहा कि अर्जुन को जिस तरह केवल चिड़िया की आंख दिखाई दी थी, उसी तरह हमें भी केवल अपने लक्ष्य पर नजर रखनी चाहिए। ऐसा होगा तो सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने कहा कि राजपूत समाज अपनी शक्ति को पहचाने और उस शक्ति का सदुपयोग करे तो अन्य समाज हमें नेतृत्व सौंपने को आज भी तैयार हैं क्योंकि सुशासन का जैसा अनुभव राजपूत समाज के पास है वैसा और किसी के पास नहीं है। गुजरात सरकार के पूर्व मंत्री किरीट सिंह राणा, अशोक सिंह जाडेजा सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मोरबी जिले के व्यापार, शिक्षा, राजनीति, राजकीय सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े समाजबंधु सम्मलित हुए। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।

तारानगर राजपूत छात्रावास में स्नेह मिलन

चुरु जिले के तारानगर स्थित राजपूत छात्रावास में राष्ट्रनायक दुगार्दास जी की जयंती की पूर्व संध्या पर एक स्नेह मिलन रखा गया जिसमें छात्रावास के विद्यार्थियों के साथ साथ शहर में रहने वाले समाज बंधु भी उपस्थित रहे। स्नेह मिलन में हुई चर्चा में दुगार्दास जी के जीवन से मिलने वाली सीख के विषय पर चर्चा की गई जिसमें उपस्थित संभागीयों ने अपनी बात कही। दुगार्दास जी को आदर्श क्षत्रिय बताते हुए उनको अपने आप में आमंत्रित करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिक्षण प्रणाली की उपयोगिता पर चर्चा की गई एवं छात्रावास में शाखा प्रारंभ करने की बात की गई। तारानगर शहर में एक शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव भी आया एवं अगस्त के अंतिम सप्ताह में मीतासर में आयोज्य शिविर में जाने के लिए भी छात्रावास के विद्यार्थियों से चर्चा की गई।

संपादकीय

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध सरकारों की नीतिगत असफलता

महिलाओं के प्रति अपराध पूरे भारत में निरंतर बढ़ रहे हैं। अपेक्षाकृत शांत व सुरक्षित समझे जाने वाले राजस्थान में भी विगत कुछ समय से इन अपराधों में चिंताजनक रूप से वृद्धि हुई है। संबंधित सरकारें और राजनेता इस संबंध में एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप में उलझे हुए हैं। लेकिन भारत जैसे देश में, जहां स्त्रियों को संसार के किसी भी अन्य स्थान से अधिक मान-सम्मान मिलता आया हो, जिसकी संस्कृति में महिलाओं को पूज्य माना जाता रहा हो, देवी का स्वरूप माना जाता रहा हो, जहां स्त्री के सम्मान की रक्षा के लिए राम-रावण और महाभारत जैसे युद्ध हुए हो, वहां पर महिलाओं के प्रति वीभत्स अपराधों की तीव्र गति से बढ़ती संख्या अनेक प्रश्न खड़े करती है। इन प्रश्नों में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न सरकारों द्वारा समाज में महिला सम्मान की भावना को बनाए रखने में नीतिगत असफलता का है। आजादी के बाद से ही तथाकथित उदारवादी और स्त्रीवादी विचारधारा के नाम पर सरकारों द्वारा महिलाओं की सुरक्षा के उद्देश्य से जो नीतियां अपनाई गई, वे वास्तव में महिलाओं के सम्मान की भारतीय संस्कृति को खंडित करने वाली रही और इसलिए ये नीतियां ही परोक्ष रूप में महिलाओं के लिए असुरक्षित और आपराधिक वातावरण बनाने का कारण बन गई हैं। किसी भी समाज में अपराध की प्रवृत्ति को रोकने में सामाजिक मूल्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है लेकिन यह भारत का दुर्भाग्य है कि आजादी के बाद से जिन के पास सत्ता रही, नीति-निर्माण का दायित्व रहा, उनके विचार और क्रियाकलाप भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को पाश्चात्य मूल्यों से प्रतिस्थापित करने वाले ही अधिक रहे और महिला के सम्मान को सर्वोच्च महत्त्व देने की भारतीय परंपरा भी इस प्रक्रिया की शिकार हुई और अब भी हो रही है।

भारत में स्त्री के आत्मसम्मान और आत्मगौरव का सर्वोच्च प्रतीक सती को माना गया, जो कोई प्रथा न होकर लौकिक संबंधों में अलौकिक प्रेम, समर्पण और पवित्रता की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति की घटना थी। लेकिन अंग्रेज काल में किसी क्षेत्र विशेष में फैली कुप्रथा को सती का नाम देकर सती शब्द को ही अप्रतिष्ठित कर दिया गया और आजादी के बाद भी देश की सत्ता संभालने वाले नेताओं द्वारा उसी लीक पर चलते हुए सती शब्द की संकुचित व्याख्या करते हुए इस शब्द के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिए। इससे स्त्री पुरुष संबंधों को केवल दैहिक भोग का साधन मानने की राक्षसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला और ऐसे में स्त्री के सतीत्व के प्रति लोगों की प्रतिष्ठा क्षीण हुई और परिणाम हमारे सामने है। ऐसा ही जौहर के साथ हुआ। अपने सम्मान की रक्षा के लिए जीवित आग में जलकर आत्मोत्सर्ग करने को जब कायरता कहा जाने लगे, सामूहिक आत्महत्या कैसे कुत्सित शब्दों से इसे परिभाषित किया जाने लगा तो ऐसे लोगों से स्त्री की गरिमा की रक्षा की अपेक्षा भी कैसे की जा सकती है? जौहर जैसी परंपरा की महानता का परिचय ही जब देश की नई पीढ़ी को नहीं कराया गया तो स्त्री के लिए उसका सम्मान क्या मायने रखता है, इस बात का उन्हें अनुभव कैसे होगा? उन्हें इस बात का अहसास ही कैसे हो कि स्त्री का सतीत्व उनकी किसी कलुषित ईच्छा की पूर्ति की वस्तु न होकर पूजनीय है। राजस्थान की वर्तमान सरकार ने तो पाठ्यक्रम से वह अंश ही हटा दिया जिसमें महाराणा प्रताप ने अपने पुत्र अमर सिंह को युद्ध में अब्दुर्रहीम खानखाना के घर की महिलाओं को बंदी बनाने पर धिक्कारते हुए उन्हें स्वयं शत्रु के शिविर में जाकर उन महिलाओं को ससम्मान लौटाने का आदेश दिया था, ऐसे में सरकार में बैठे नेताओं ने अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं को शांत करने के लिए क्या युवा पीढ़ी को ऐसे प्रेरणास्पद उदाहरणों से महिला सम्मान का पाठ सीखने से वंचित नहीं किया? राष्ट्रनायक दुर्गादास द्वारा अपने प्रबल शत्रु औरंगजेब की पौत्री के साथ किए गए सम्मानजनक आचरण के बारे में युवाओं को पढ़ाकर उनके मन में संप्रदाय, जाति आदि भेदों से निरपेक्ष स्त्री-सम्मान के मूल्य को स्थापित करने के प्रयास क्या कभी सरकारों द्वारा किए गए? स्त्री के सम्मान के लिए अपने पूरे जीवन को संघर्षभूमि बना देने वाले शेखाजी के उस पक्ष को कब हमारी शिक्षा प्रणाली में स्थान दिया गया? बूंदी की राजकुमारी के सम्मान के लिए अकबर की सल्तनत को चुनौती देने वाले कल्ला रायमलोत लिए क्या हमारे विद्यालयी पाठ्यक्रम में एक अवतरण जितना भी उल्लेख रह गया है? किसी भी समाज में इस प्रकार के नैतिक मूल्यों के निर्वहन की परंपरा होने के बावजूद उनसे प्रेरणा लेने के द्वार यदि बंद कर दिए जाते हैं तो उस समाज की वही स्थिति होती है जो वर्तमान भारतीय समाज की हो रही है। इतिहास कोई घटनाओं का वर्णन या अर्थव्यवस्था, समाज व्यवस्था आदि के निर्जीव इतिवृत्तात्मक विवरण का नाम नहीं होता बल्कि इतिहास जीवंत प्रेरणा होती है जो व्यक्ति को उन आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है जिनको अपना कर उसके पूर्वज महान बन पाये। लेकिन भारत की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह रही कि आजादी के बाद उसके नीति निमार्ताओं ने इतिहास के उन्हीं अंशों को उद्घाटित करने का उद्यम किया जो उनकी मनः स्थिति और कृत्यों को सही सिद्ध कर सके। उन्होंने इतिहास का उपयोग अपने वर्तमान को न्यायसंगत सिद्ध करने के लिए किया और परिणाम स्वरूप युवा पीढ़ी के लिए इतिहास से आदर्श प्रेरणाएं पाठ्यक्रम और शिक्षा प्रणाली से गायब कर दी गईं और उसका दुष्प्रभाव आज हमें दृष्टिगोचर हो रहा है।

ऐसा ही महिलाओं के व्यवहार में भी हुआ। वास्तविकता तो यह है कि कभी भी हमारे नीति-निमार्ताओं द्वारा मातृशक्ति के प्रति सम्मान के भाव को प्रबल करने वाली नीतियां बनाने के बारे में चिंतन ही नहीं किया गया। इसके उलट सरकारों द्वारा इस भाव को कमजोर करने वाली नीतियों को अपनाकर हमारे पूर्वजों द्वारा रक्षित और पोषित स्त्री-सम्मान की भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के षड्यंत्रों का ही परोक्ष-अपरोक्ष रूप से समर्थन किया जाता रहा है।

पाश्चात्य उपभोगवादी संस्कृति से प्रभावित नीति निर्माता वर्ग द्वारा भारतीय मूल्यों की उपेक्षा का ही परिणाम है कि आज अपने माता-पिता, परिवार और समाज के विरुद्ध जाकर किए जाने वाले अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे जोड़ों को लाखों रुपए सरकार द्वारा दिए जाने की नीतियां बनाई जा रही हैं। ऐसा कर-के अपवाद स्वरूप होने वाली इन घटनाओं को प्रचलन में लाकर भारतीय पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के विघटन के बीज विवेकहीन नेताओं द्वारा बोए जा रहे हैं और इस विघटन का प्रभाव युवाओं को मिलने वाले पारिवारिक व सामाजिक मार्गदर्शन के अभाव के रूप में सामने आता है जो अंततः महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों के पीछे एक महत्वपूर्ण कारक बनता है। टेलीविजन, सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं आदि के माध्यम से स्त्री को सम्मान की अधिकारिणी से उपभोग की वस्तु में बदलने के कृत्य देश में निर्बाध रूप से किए जा रहे हैं और सरकारों के पास न उन्हें रोकने या हतोत्साहित करने के लिए नीति बनाने की इच्छाशक्ति है न ही स्त्री-सम्मान के मूल्य को समाज में मजबूत करने के लिए कोई नीतिगत समझ अथवा योजना। प्रकृति से नैसर्गिक रूप से प्राप्त मातृत्व, सहनशक्ति, स्नेह, सौम्यता, समर्पण, एकनिष्ठता और संयम जैसे गुणों के कारण जहां स्त्री को भारतीय संस्कृति में देवी का स्थान देकर पूज्य माना गया था, वहीं अब स्त्री के केवल दैहिक स्वरूप को ही प्राथमिकता देकर उसे मात्र प्रदर्शन की वस्तु बनाया जा रहा है और दुखद यह है कि स्त्री स्वयं भी छद्म आधुनिकता और समानता के मुखौटे पहनी इस अपसंस्कृति के प्रसार में भागीदार बन रही है। इस अपसंस्कृति का प्रभाव इतना गहरा है कि राधा की श्री कृष्ण के प्रति अलौकिक भक्ति को भी लौकिक प्रेम की कहानी बना कर प्रस्तुत किया जा रहा है और तथाकथित धर्म प्रचारक व कथावाचक इस अभियान के अग्रगामी बन रहे हैं।

इस प्रकार के सांस्कृतिक प्रदूषण को रोकने के लिए जिस समझ, संकल्प और साहस की आवश्यकता है, उनका हमारे नीति-निमार्ताओं में पूर्णतया अभाव ही दिखाई देता है लेकिन इसको रोके बिना महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों को रोकना संभव नहीं है। इन अपराधों को रोकने के लिए आज सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के प्रति सम्मान के सामाजिक मूल्य को पुनः वही प्रतिष्ठा प्रदान की जाए जो भारतीय संस्कृति में इसे पहले प्राप्त थी। ये तभी संभव है जब स्त्री-सम्मान को सर्वोच्च स्थान देने के हमारे गौरवशाली इतिहास के उदाहरणों को युवा पीढ़ी को पढ़ाया जाए, माता सीता, मदालसा, हाड़ी रानी जैसी हमारी महान माताओं के जीवन से बालिकाओं को परिचित करा कर उनमें आत्मगौरव और आत्मसम्मान की भावना भरी जाए और तुच्छ दैहिक सुखों पर परिवारिक, सामाजिक और मानवीय दायित्वों को प्राथमिकता देना सिखाने वाला विवेक नवपीढ़ी में जागृत किया जाए। जिस शिक्षा व्यवस्था पर यह सब करने का दायित्व है, वह वर्तमान में केवल जीवन निर्वाह की व्यवस्था करने के लिए आवश्यक जानकारियां प्रदान करने की यांत्रिक व्यवस्था मात्र बनकर रह गई है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस शिक्षण की कमी को दूर करने का प्रयास अपनी शाखाओं व शिविरों के माध्यम से कर रहा है किंतु समाज की विशालता के कारण आवश्यकता बहुत अधिक है, इसलिए इस कार्य में हम सबका सक्रिय सहयोग आवश्यक है।

काणेटी और गांधीनगर में प्रांतीय कार्ययोजना बैठकें संपन्न

मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत की कार्ययोजना बैठक 6 अगस्त को काणेटी गांव में आयोजित हुई। बैठक में आगामी समय में प्रांत में आयोजित होने वाले शिविरों पर चर्चा हुई, साथ ही जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त किए जाने वाले कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई। दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह की तैयारियों हेतु चर्चा करके दायित्व सौंपे गए। संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी व प्रांत प्रमुख बटुकसिंह काणेटी सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। इसी दिन शाम को

संभाग के अहमदाबाद-गांधीनगर प्रांत की बैठक गांधीनगर स्थित सेंट्रल विस्टा गार्डन में आयोजित हुई। बैठक में प्रांत में नई शाखाएं शुरू करने एवं शिविरों के आयोजन पर विस्तार से चर्चा हुई। प्रांत के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा कर जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण देने पर भी चर्चा हुई। संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह हरदासकाबास व प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा अन्य सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

समाज चरित्र के निर्माण की कार्यशाला है श्री क्षत्रिय युवक संघ

(दुगार्दास जयंती की पूर्व संध्या पर हरियाणा के फतेहाबाद में कार्यक्रम का आयोजन)

समाज चरित्र का अर्थ है कि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत मान-अपमान, जय-पराजय, प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा आदि पर समाज के हित को, समाज के सम्मान और स्वाभिमान को प्राथमिकता दे। राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ का जीवन ऐसे समाज चरित्र का आदर्श प्रतिमान है। उन्होंने समाज और राष्ट्र को संकट से बचाने के लिए अपमान और निर्वासन को भी स्वीकार किया। क्षत्रिय के गीता में वर्णित सातों गुणों को धारण करने वाले दुगार्दास जी के व्यक्तित्व को समाज चरित्र की यह विशेषता और अधिक अनूठा बनाती है। आज भी ऐसे ही समाज चरित्र के निर्माण की आवश्यकता है जिससे समाज को एक सूत्र में बांधा जा सके। श्री क्षत्रिय युवक 76 साल से लगातार पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से यह कार्य कर रहा हैं। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने हरियाणा के फतेहाबाद में 12 अगस्त को राष्ट्रनायक दुगार्दास जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमारे इतिहास में जब जब व्यक्ति चरित्र समाज चरित्र से बड़ा हुआ तब तब उसका नुकसान समाज ही नहीं, राष्ट्र को भी उठाना पड़ा। आज व्यक्ति ने अपने चरित्र को परिवार, समाज और राष्ट्र से बड़ा कर दिया है जिसके कारण परिवारों और समाज में विघटन और द्वेष बढ़ रहे हैं। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ और उसके अनुषंगिक संगठनों श्री प्रताप फाउंडेशन और श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के बारे में भी जानकारी दी गई। महेंद्र सिंह चारनौंद ने अपने विचार रखते हुए कहा कि युवाओं को ज्यादा से ज्यादा संघ से जुड़कर हरियाणा में इस काम को आगे बढ़ाना चाहिए। भवानी सिंह बोसवाल ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ना सिर्फ हमारे इतिहास की बात करता है बल्कि समाज के वर्तमान और भविष्य के निर्माण के लिए भी काम कर रहा है। शान्तनू सिंह कांटी ने कहा कि लोकतंत्र में हमारी भागीदारी तभी बढ़ेगी जब हम सभी समाजों को साथ लेकर काम करेंगे। कार्यक्रम में सुभाष सिंह रंधावा, बलवीर सिंह चौहान सिरसा, हरिकेश सिंह चौहान हिसार, विनोद सिंह नंगथला, दीपू सिंह सारंगपुर, उम्मेद सिंह चिड़ोद, मनीष सिंह निर्वाण, भवानी सिंह ढिंगसरा, अमन सिंह भट्ठू, राजकुमार सिंह सिवानी बोलान, विक्रम सिंह धांसू, अजय चंदेल बोसवाल, अर्जुन सिंह अग्रोहा, संदीप सिंह ढिंगसरा आदि ने भाग लिया। संचालन अरविंद सिंह बालवा ने किया।

खैरवा (पाली) में समारोह पूर्वक मनाई जोर जी चांपावत की जयंती

पाली जिले के खैरवा गांव में वीर शिरोमणि जोर जी चांपावत की 189वीं जयंती 31 जुलाई को समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री जोर जी चांपावत स्मारक जीर्णोद्धार समिति के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्र के समाजबंधु सम्मिलित हुए और अपने वीर पूर्वज को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कहा कि हमारे महापुरुषों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में हम इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित होते हैं तो यह हमारी सामाजिक जागृति का लक्षण है। लेकिन हमको यह भी चिंतन करना चाहिए कि हम तो अपने पूर्वजों को याद करते हैं, उनके कृत्यों के कारण अनुग्रहित होते हैं, लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ी को हम क्या देकर के जाएंगे? वे हमें किस लिए याद करेंगे? यदि हम ऐसा कोई कार्य नहीं करते हैं जिस पर वे गर्व कर सकें, तो क्या आने वाली पीढ़ियां हमें कोसेगी नहीं? यह हमारे सामने प्रश्न चिन्ह है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के पास वह कार्यप्रणाली है जो बच्चों और युवाओं में हमारे पूर्वजों की भांति क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण कर सके। इसलिए आप स्वयं भी संघ में आएं और अपने बच्चों को भी भेजें। कार्यक्रम को समुंद्र सिंह बांता, सिद्धार्थ सिंह रोहित, हनुमान सिंह खांगटा, श्याम सिंह सजाडा, मालम सिंह हेमावास, गोपाल सिंह, जसवंत सिंह ठाकुरला, पवन कंवर खैरवा, शैतान सिंह गिरवर आदि ने भी संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने खैरवा गांव में स्थित जोरजी चंपावत की समाधि पर स्मारक बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं ने स्मारक के निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग की घोषणा भी की। चंद्रवीर सिंह सिसरवादा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सिद्धपुर और खोडियार प्रांत में संपर्क यात्राओं का आयोजन

उत्तर गुजरात संभाग के सिद्धपुर प्रांत के वागड़ी, वलासना, उनाद, जुना आस्पा, नवा आस्पा व गोरिसना गांवों में 30 जुलाई को संपर्क यात्रा की गई। रणजीतसिंह नंदाली और इंद्रजीतसिंह जेतलवासना ने इन गांवों में समाजबंधुओं से संपर्क कर श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी के बारे में जानकारी दी एवं जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। गांवों में शाखाएं लगाने पर भी चर्चा की गई एवं समाजबंधुओं को संघ साहित्य भी उपलब्ध कराया गया। गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रान्त के विभिन्न गांवों में भी 6 अगस्त को संपर्क यात्रा की गई। यात्रा के दौरान अमरगढ, आंबला, पांचवडा, काटोडिया, सोनगढ आदि गांवों में बैठकें आयोजित की गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेन्द्र सिंह आंबली द्वारा समाजबंधुओं को संघ, पूज्य श्री तनसिंह जी व जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में बताया

गया। सोनगढ गुरुकुल में 13 से 15 अगस्त तक आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर पर भी चर्चा की गई। छनूभा पल्हेगाम व घनश्याम सिंह बावडी भी यात्रा में शामिल रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.08.2023 से 29.08.2023 तक	**सावर,** अजमेर।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**इंदो का बास,** देणोक, जोधपुर।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**राणाजी का कोटड़ा,** बाड़मेर।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**रमजान की गपन,** बादरानी, बाड़मेर।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**सोनियासर,** चुरू।
06.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**मीतासर,** चुरू।
07.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**चावंडिया,** नागौर।
08	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.08.2023 से 30.08.2023 तक	**साजियाली,** स्थान- वांकल माता मंदिर, साजियाली। प्रांत बायतु, संभागः बालोतरा। सम्पर्क सूत्रः 9664451452. (1) बायतु से हर घंटे बसें रिफाइनरी के पास साजियाली फांटा उतरें। 2. बालोतरा से हर घंटे फलसुंड रूट की बस से साजियाली गांव उतरें। (3) गिड़ा व परेऊ से हर घंटे बसें, साजियाली गांव उतरें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

निरंतर जारी है युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का सिंचन

लसानी

खारा राठौड़ान

आसलसर

(पेज एक से लगातार) बाली गांव के नरपत सिंह, सज्जन सिंह, शैतान सिंह, देवेंद्र सिंह सहित सभी ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी अवधि में बाड़मेर संभाग में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर खारा राठौडान गांव में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए राजेन्द्र सिंह भिंयाड़ (द्वितीय) ने शिविरार्थियों से कहा कि आज के अर्थ प्रधान युग में लोग जीवन जीने की कला को ही भूल गये हैं, हमारी संपूर्ण जीवन शैली ही अव्यवस्थित हो गई है। ऐसे में हमें छोटे-छोटे अणुव्रत लेकर हमारे जीवन को व्यवस्थित करना होगा। संघ के ये शिविर ऐसे ही अणुव्रत हैं। उन्होंने बताया कि किसी भी महान लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमारे शरीर, मन और बुद्धि का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। इसके लिए संघ के इन शिविरों में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उन्हें स्वस्थ बनाने का अभ्यास कराया जाता है। शिविर में बाड़मेर, चौहटन व शिव क्षेत्र के 255 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नरेंद्र सिंह खारा ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी प्रकार बालिकाओं का एक चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर राजसमंद जिले के लसानी गांव में 27 से 30 जुलाई तक आयोजित हुआ। लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने शिविर का संचालन करते हुए बालिकाओं से कहा कि बालिकाओं का दायित्व समाज में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि बालिका को ही आगे जाकर माता के रूप में समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण का कार्य करना है। हमें अपने इस दायित्व को समझते हुए अपने जीवन को अनुशासित, मर्यादित और संस्कारित बनाना है। ऐसा तभी होगा जब हम संघ द्वारा दिए जा रहे शिक्षण को आत्मसात करके अपने आचरण का अंग बना लें। इसलिए जो कुछ अभ्यास हमें यहां कराया जा रहा है उसे यहां से जाने के बाद भी निरंतर रखना आवश्यक है। शिविर में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, राजसमन्द, पाली, वागड़ क्षेत्र की 260 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के समापन के पश्चात नारायण सिंह जी रेडा की जयंती भी मनाई गई जिसमें संभागप्रमुख ब्रजराज सिंह खारड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जोधपुर शहर प्रांत के नाँदड़ी गाँव में भी चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 28 से 31 जुलाई तक संपन्न हुआ। शिविर का संचालन भैरु सिंह बेलवा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि जोधपुर में तो अनेकों लोग रहते हैं लेकिन आप उन सबसे अलग हैं क्योंकि आप में समाज के प्रति पीड़ा है। उसी पीड़ा के कारण आप सब इस शिविर में आये हैं। उस पीड़ा को जगाने का काम पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से किया है। हमें उस पीड़ा को आगे भी प्रसारित करना है जिससे पूज्य श्री का संदेश समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच सके। उन्होंने कहा कि संघ का प्रशिक्षण हमारे व्यक्तित्व को निखार देता है। यहां की छोटी-छोटी बातों में जीवन की महत्त्वपूर्ण शिक्षा छिपी है, इसलिए जागृत रहकर प्रत्येक गतिविधि में भाग लें। शिविर में क्षेत्र के 130 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में भरतपाल सिंह दासपा व महेंद्र सिंह गुजरावास भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग के चुरू प्रांत के आसलसर गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 6 से 9 अगस्त की अवधि में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए किशन सिंह गोरीसर ने शिविरार्थियों से कहा कि वर्तमान समय में संगठन ही सबसे बड़ी शक्ति है। हम संगठित होंगे तो ही हम किसी भी उद्देश्य को प्राप्त कर सकेंगे। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए समाज में संगठन का निर्माण कर रहा है। हम भी इस संगठन की कड़ी बने हैं, इसलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हमारे में कोई कमजोरी नहीं रह जाए। यदि एक कड़ी भी कमजोर रह गई तो संगठन टूट सकता है, इसलिए संघ हमें मजबूत बनने का अभ्यास करवा रहा है। उन्होंने कहा कि अपने सामाजिक भाव को दृढ़ बनाते हुए हमें पूज्य श्री तनसिंह जी के बताए आदर्शों पर चलना है और अन्यों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है। शिविर में 95 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मध्य गुजरात संभाग के चरोतर प्रांत में भी एक तीन दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आणंद जिले के अडास गांव में 28 से 30 जुलाई तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन योगेंद्र सिंह काणेटी ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि समाज व्यक्तियों से ही बनता है। जैसा व्यक्तियों का चरित्र होगा वैसा ही समाज भी बनेगा। इसीलिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना समाज के युवाओं के चरित्र निर्माण के लिए की। हमारे पूर्वजों के जैसे संस्कार थे वैसे ही संस्कार हमें भी अपने अंदर लाने होंगे तभी हम समाज व राष्ट्र की सेवा और रक्षा कर सकेंगे। यहां कराए जा रहे अभ्यास को हम निरंतर रखेंगे तो निश्चित रूप से हमारा जीवन परिवर्तित होगा। शिविर में अडास, वडोद, देवा, सुदण, मोडासर, काणेटी, खोडा, चेखला, सरण का खेड़ा आदि गांवों के 75 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का जिम्मा समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर संभाला।

अल्पाहार खारा राठौड़ान

अड़ास

बाली

जयपुर में जिला स्तरीय व्यवसायी चिंतन बैठक संपन्न

जयपुर जिले में क्षत्रिय समाज के व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र में कार्यरत समाजबंधुओं के बीच पारस्परिक संपर्क, समन्वय एवं सहयोग विकसित करने हेतु 6 अगस्त को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा जयपुर स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समाज के 100 से अधिक व्यापारी बंधु सम्मिलित हुए। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में बताया। समाज के उद्यमी बंधु परस्पर संपर्क एवं सहयोग की भावना से कैसे समाज के काम में सहयोगी बन सकते है, बैठक में इस पर विस्तृत चर्चा की गई। सभी संभागियों को वर्तमान में चल रहे संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर भी विस्तार से जानकारी दी गई, साथ ही उन्हें दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह हेतु आमंत्रित भी किया गया। कार्यक्रम में जितेंद्र सिंह शेखावत, रणवीर सिंह नाथावत, नरेंद्र सिंह छापरी, दयाल सिंह श्यामपुरा, मोहिंद्र सिंह राठौड़, विक्रम सिंह देवली, ललित सिंह सांचोरा, भंवर मनजीत सिंह अमरपुरा, रोहित सिंह कांकरिया, भंवर सिंह जुसरी, धूड़ सिंह भोनावास आदि ने भी अपने विचार रखें। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी का सानिध्य भी संभागीयों को प्राप्त हुआ, उन्होंने कहा कि यह राजपूत जाति हमारी मां है और हम सबको इसका सपूत बनने का प्रयास करना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर, देवेन्द्र सिंह बरवाली एवं राम सिंह अकदड़ा सहित स्थानीय सहयोगी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

प्रोफेसर राठौड़ बने मानविकी संकायाध्यक्ष

प्रोफेसर मदन सिंह राठौड़ को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग में मानविकी संकाय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राठौड़ वर्तमान में पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर की शासी परिषद के सदस्य हैं। वे इससे पूर्व राजस्थान ललित कला अकादमी और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी की शासी परिषद के सदस्य भी रह चुके हैं। प्रोफेसर राठौड़ राजस्थान के पांच से अधिक विश्वविद्यालयों में सिंडीकेट, प्रबंध मंडल और चयन समिति के सदस्य रह चुके हैं। आप श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की उदयपुर टीम के सहयोगी है।

पूजा कंवर सणाऊ का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयन

बाड़मेर जिले के सणाऊ गांव की निवासी पूजा कंवर पुत्री हरी सिंह का अजमेर में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित होने वाली सृजनात्मक प्रतियोगिता 2023 के लिए एकल गीत श्रेणी में चयन हुआ है। पूजा कंवर राउमावि सणाऊ (चौहटन) में 10वीं कक्षा की छात्रा है।

(पेज दो से जारी) तर्कशील और प्रयोगवादी...

कालियाबीड़

पाली जिले में अलख महाराजजी मंदिर बाली में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के दौरान श्री रेडा की जयंती मनाई गई। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने उपस्थित समाजबंधुओं से कहा कि जयन्ती उन लोगों की मनाई जाती है जो महान कार्य करते है। नारायणसिंह जी ने बाल्यकाल में ही श्री क्षत्रिय युवक संघ को अपना लिया, संघ के मार्ग को अपना मार्ग बना दिया और जीवन भर संघ के निमित्त ही सभी कार्य किए। उन्होंने अपने आपको इस मार्ग पर खपा दिया और उच्च कोटि के साधक बन गये। हीरसिह लोडता ने पूज्य नारायण सिंह रेड़ा का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। लक्ष्मण सिंह रायरा, नरपत सिंह बाली, चित्रा कंवर ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मारवाड़ जंक्शन व सोजत मण्डल के सैकड़ों समाजबंधुओं व मातृशक्ति की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने किया। बालोतरा संभाग के टापरा गांव में भी जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक राम सिंह माडपुरा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महापुरुष अपने जीवन के उद्देश्य के निमित्त ही जीवन जीते हैं। नारायण सिंह जी रेड़ा भी ऐसे ही महापुरुष थे। उन्हीं की भांति हमारी प्राथमिकता श्री क्षत्रिय युवक संघ होना चाहिए, तो हम भी अपने जीवन को सार्थक बना सकेंगे। चंदन सिंह चांदेसरा ने पूज्य नारायण सिंह के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। प्रांत प्रमुख चंदन सिंह थोब सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मनोहर सिंह सिणेर ने कार्यक्रम का संचालन किया। संभाग में इसके अतिरिक्त दुगार्दास राजपुत बोर्डिंग हाउस बालोतरा, वरिया, पादरू, कुंडल, बाल गोपाल छात्रावास सिवाना में शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई। श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास, डूँगरपुर में 29 जुलाई को जयंती मनाई गयी। गुमान सिंह वालाई ने पूज्य श्री नारायण सिंह जी के जन्मस्थान, शिक्षा, परिवार, संघ में प्रवेश एवं सांघिक जीवन यात्रा के बारे में बताया। शम्भू सिंह लाम्बपारड़ा द्वारा नारायण सिंह जी के पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रति समर्पण व उनके जीवन में घटित यौगिक क्रियाओं से अवगत कराया। टैंक बहादुर सिंह गेहूँवाड़ा ने सभी समाजबंधुओ से आगामी 28 जनवरी 2024 को पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह में पहुंचने का निवेदन किया। गोपीनाथ का गड़ा, बाँसवाड़ा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें गुमान सिंह वालाई सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुड़ामालानी प्रांत के बूठ गांव में शाखा स्थल पर जयंती मनाई गई। स्वरूपसिंह बूठ ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय दिया। प्रांत प्रमुख गणपत सिंह बूठ ने कहा कि जयंती उन्हीं की मनाई जाती है जो स्वधर्म का पालन करते हुए परमपिता परमेश्वर द्वारा सौंपे कार्य को पूरा करते हैं। पूज्य नारायण सिंह जी ने ऐसा ही किया। बाबू सिंह बूठ प्रथम ने नारायण सिंह जी के सान्निध्य के संस्मरण सुनाए। गुड़ामालानी प्रांत के मिठडा गांव में स्थित पाबूजी मन्दिर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कमल सिंह गेहूं ने कहा कि नारायण सिंह जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। संघ हमें मानव जीवन के लक्ष्य की ओर बढाने वाला राजमार्ग है, यह पूज्य नारायणसिंह जी ने अपने जीवन के माध्यम से सिद्ध किया। कार्यक्रम का संचालन हरी सिंह उण्डखा ने किया। शंभू सिंह मीठडा ने सभी को जन्म शताब्दी समारोह में दिल्ली पहुंचने का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम में मन्दिर के पुजारी सूरत पूरी, जालम सिंह मीठडा, नरपत सिंह महाबार सहित अन्य ग्रामवासी उपस्थित रहे। सार्वजनिक सभा भवन, राजपुतों का वास, केलनोर (बाड़मेर) भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें समाजबंधुओं ने श्री रेडा की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। जैसलमेर जिले के दवाड़ा गाँव में स्थित आईनाथ जी के मंदिर में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई। सामूहिक यज्ञ के पश्चात रतनसिंह बडोडा गांव ने संघ व पूज्य नारायण सिंह जी रेडा का परिचय प्रस्तुत किया। प्रांत प्रमुख उम्मेद सिंह बडोड़ा गाँव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। लाडनूं प्रांत के बीदासर मंडल के गेडाप ग्राम में श्री श्रद्धा विद्या भारती संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। नागौर संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा के जीवन पर प्रकाश डाला एवं बताया कि संघ से जुड़कर हम किस प्रकार क्षात्रधर्म का पालन कर सकते हैं व अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं। मिथिलेश कंवर गेडाप, प्रभुसिंह आसरासर, अमरसिंह गुन्दुसर, राजेंद्र कुमार नायक आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जयसिंह सागुबड़ी ने किया। प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढीगसरी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कुचामन सिटी स्थित आयुवान निकेतन में एवं परबतसर क्षेत्र के नैणियां गांव में भी जयंती मनाई गई। चुरू जिले के सरदारशहर स्थित राजपूत छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में राजवीर सिंह कंवलासर ने संघ का संक्षिप्त परिचय देते हुए जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में बताया। विक्रम सिंह पाबूसर ने श्री रेड़ा का जीवन परिचय दिया। पूर्व प्रधान भीखम सिंह सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। राजपूत धर्मशाला पायली (रतनगढ़) में भी जयंती मनाई गई। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेर सिंह गुढा ने कहा कि श्री नारायण सिंह जी रेड़ा का जीवन हम सब स्वयंसेवकों के लिये एक अनुकरणीय पथ है जिस पर चल कर हम सब भी वो प्राप्त कर सकते है जो नारायण सिंह जी ने प्राप्त किया। परतु शर्त यह है कि उनके जैसी श्रद्धा और पवित्र भाव हमारे अंदर भी होने चाहिये। गिरवरसिंह जालेउ ने श्री रेड़ा का जीवन परिचय बताया। कार्यक्रम का संचालन किशन सिंह गौरिसर ने किया। कार्यक्रम में अनेकों ग्रामवासी उपस्थित रहे। महाराजा श्री तारा सिंह स्मृति छात्रावास तारानगर में क्षत्रिय विकास संस्थान के तत्वाधान में नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें अनेकों समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर श्री रेडा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। शेखावाटी संभाग प्रमुख खींव सिंह सुल्ताना ने नारायण सिंह जी का परिचय देते हुए 28 जनवरी 2024 को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में होने वाले पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष हेतु निमंत्रण दिया। पूर्व विधायक मनोज न्यांगली ने कहा कि हमें सभी महापुरुषों का सम्मान करना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। पराक्रम सिंह राठौड़, आशा कंवर, मातु सिंह मानपुरा, वीर बहादुर सिंह राठौड़ (अध्यक्ष क्षत्रिय विकास संस्थान), एडवोकेट जितेंद्र सिंह राठौड़ आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन नरेंद्र सिंह तोगावास ने किया। चुरू जिले के भूकरका में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। महाराणा प्रताप छात्रावास, लाल बाग श्रीनाथद्वारा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मेवाड़ वागड़ संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। अजमेर प्रांत में वैभव वाटिका कुशवाहा फार्म विजयनगर में भी जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां द्वारा पूज्य नारायण सिंह जी के बारे में बताया गया व उनके द्वारा समाज व श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए किए गए कार्यों को स्मरण किया गया। कार्यक्रम के पश्चात पधारे हुए आगंतुको व राजपूत छात्रावास विजयनगर अध्यक्ष सहदेव सिंह कुशवाहा को माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रेषित यथार्थ गीता व हीरक जयंती विशेषांक भेंट किया गया। भीलवाड़ा के गंगापुर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। जावदा क्षेत्र में हाड़ा की मोरवन के बरली माता मंदिर प्रांगण में भी जयंती मनाई गई। दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा, सीकर में भी जयंती मनाई गई। चित्तौड़गढ़ स्थित भुपाल पब्लिक स्कूल परिसर में भी जयंती

चित्तौड़गढ़

समारोह का आयोजन किया गया। भवानी सिंह मुंगेरिया व गंगा सिंह साजियाली ने नारायण सिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बताया। हर्षवर्धन सिंह रूद ने पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी। बालू सिंह जगपुरा, राम सिंह ताणा, अनिरुद्ध सिंह बानीणा, शक्ति सिंह मुरलिया, गोपाल सिंह राठौड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। भुपाल पब्लिक स्कूल एम.डी. लाल सिंह भाटियों का खेड़ा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन नरेंद्र सिंह नरधारी ने किया। चितौड़गढ़ में ही मां दुर्गा जी मंदिर कपासन में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया पूज्य नारायण सिंह रेड़ा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने प्रताप फाउंडेशन एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के बारे में जानकारी दी। नरेंद्र सिंह नरधारी, राजेंद्र सिंह मुरोली, कर्नल सिंह कांकरवा, सुभाष सिंह काकरवा, सुरेंद्र सिंह माताजी का खेड़ा, गोविंद सिंह काकरिया, कुंदन सिंह रूद, शक्ति सिंह मुरलिया, कैलाश सिंह बेणीपुरिया, नकुल सिंह मुरोली, नाहरसिंह सोनियाणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन दिलीप सिंह रूद ने किया। चित्तौड़गढ़ के खेड़िया में भी जयंती मनाई गई। जालौर जिले में राजपूत कोटडी जाखड़ी में भी जयंती मनाई गई। ईश्वर सिंह देसू, ईश्वर सिंह चोरा, महेंद्र सिंह जाखड़ी, लक्ष्मण सिंह रतनपुर, फूल सिंह जाखड़ी आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में रानीवाड़ा, करडा, सांचौर, जसवंतपुरा, सुरावा, धानेरा क्षेत्र के समाजबंधु उपस्थित रहे। सिरोही के दत्ताणी में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। सिरोही प्रांत के लुणोल गांव स्थित वेडेश्वर मामाधणी मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें विक्रम सिंह राडबर, भवानी सिंह भटाणा, दीपेंद्र सिंह पीथापुरा, दलीप सिंह मांडानी, गौतम सिंह मगरीवाडा, मांगू सिंह बावली, महेंद्र सिंह मगरीवाड़ा आदि ने विचार रखे। भागीरथ सिंह लुणोल ने कार्यक्रम का संचालन किया। जोधपुर संभाग में माणकलाव, भाण्डू कल्ला, पाल गाँव, जोध सिंह सिद्धा, सेतरावा और नांदड़ी में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। बाड़मेर शहर स्थित आलोक आश्रम, बिताया, श्री क्षत्रिय बोर्डिंग चौहटन, खारा राठौड़ान, जय भवानी छात्रावास बाड़मेर, इन्द्रोई, हरसाणी, सेड़वा, दानजी की होदी, हाथीतला, भालीखाल, उण्डखा, बूल (धोरीमन्ना) और भगु सोढ़े की ढाणी (बाखासर) में भी जयंती मनाई गई। गुजरात में सुरेंद्रनगर स्थित शक्तिधाम कार्यालय में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा के सान्निध्य में जयंती मनाई गई। सूरत प्रांत के सारोली मंडल के वीर अभिमन्यु उद्यान में भी जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने बताया कि श्री रेड़ा का जीवन हमें अपने उद्देश्य के लिए सर्वात्मना समर्पण भाव की प्रेरणा देता है। भोपाल सिंह सामल द्वारा नारायण सिंह रेड़ा का जीवन परिचय दिया गया।

प्रेम सिंह जाडन बने कांग्रेस विधि प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष

पाली जिले के जाडन गांव निवासी प्रेम सिंह राठौड़ को पाली जिला कांग्रेस के विधि प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौपी गई है। पाली जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रेम सिंह इससे पहले कांग्रेस पार्टी में विधि प्रकोष्ठ के सचिव एवं जोधपुर संभाग के संयोजक के पद पर कार्य कर चुके हैं।

गोता (अहमदाबाद) में मातृशक्ति द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद में रहने वाले राजस्थान के वागड़ क्षेत्र के प्रवासी समाजबंधुओं के परिवारों की मातृशक्ति द्वारा राजपूत समाज भवन गोता में 30 जुलाई को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिलाओं द्वारा सांस्कृतिक जागरण के उद्देश्य से बनाए गए 'बाईसा सांस्कृतिक गतिविधि समूह' द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा क्षत्रिय धर्म जागृति, सांस्कृतिक ज्ञान, परंपरा-पालन आदि विषयों पर विचार रखे गए। मातृशक्ति द्वारा तलवारबाजी की कला का प्रदर्शन भी किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अहमदाबाद-गांधीनगर के प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि नारी यदि चाहे तो अपनी संतान को सही शिक्षण देकर महान बना सकती है। रानी मदालसा का उदाहरण हमारे सामने हैं जिन्होंने अपनी संतानों को आत्म-कल्याण के पथ पर अग्रसर किया। उन्होंने सभी को श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय देते हुए जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी। उन्होंने संघ के महिला विभाग और उसके कार्यों के बारे में भी बताया। सभी ने मातृशक्ति के समूह द्वारा विशेष रेल का एक कोच भरकर दिल्ली पहुंचने का संकल्प व्यक्त किया गया।

संघ को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने में सभी का सहयोग आवश्यक: संघप्रमुख श्री

कच्चे मिट्टी के घड़े को हम जैसा आकार देना चाहते हैं वैसा दे सकते हैं लेकिन उसी मिट्टी के पकने के बाद फिर उसमें परिवर्तन करना मुश्किल होता है। इसी प्रकार मानव निर्माण के कार्य में भी कच्ची उम्र के बालकों को संस्कारित करना अधिक उपयुक्त होता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ शाखाओं व शिविरों के माध्यम से नन्हें बालको में क्षत्रियोचित संस्कार निर्माण का काम करता है। लेकिन प्रौढ़ पीढ़ी में भी कार्य करने की आवश्यकता है इसलिए स्नेहमिलन, जयंती, विभिन्न प्रकोष्ठ, अनुषंगिक संगठनों के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। इसमें हम सभी के सक्रिय सहयोग की

आवश्यकता है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने 12 अगस्त को भीलवाड़ा शहर में कुंभा छात्रावास में नियमित लगने वाली शाखा के स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए कही। दो दिवसीय मेवाड़ प्रवास पर पधारे संघप्रमुख श्री ने स्वयंसेवकों से शाखा में निरंतर रहने की बात कही और बताया कि नियमित और निरंतर अभ्यास ही स्थाई संस्कारों का निर्माण करने का मार्ग है। उन्होंने सभी को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए दिल्ली आने का निमंत्रण दिया। वहाँ से रवाना हो कर संघप्रमुख श्री सल्यावड़ी गाँव पहुंचे जहां स्थानीय सहयोगियों से संवाद कर वहीं रात्रि विश्राम किया।

धंधुका में शाखा मिलन का आयोजन

गुजरात में धंधुका में 12 अगस्त को वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह धोलेरा के सान्निध्य में शाखा मिलन का आयोजन हुआ। माननीय अजीत सिंह जी ने शाखा में उपस्थित स्वयंसेवकों को भारतीय संस्कृति में नमस्ते का महत्व बताते हुए कहा कि नमस्ते व्यक्ति के हाथ, मस्तिष्क और हृदय की संयुक्तता का प्रतीक है। नमस्ते व्यक्ति को नहीं बल्कि उसके भीतर स्थित परमेश्वर को किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में

परमेश्वर के स्वरूप को देखने का व्यावहारिक अभ्यास हम नमस्ते के माध्यम से करते हैं। उन्होंने बताया कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने समस्त शास्त्रों का सार हमें संघदर्शन के रूप में दिया है। इस दर्शन को आचरण का अंग बनाने का माध्यम शाखा है। इसलिए नियमित रूप से शाखा में आते रहना आवश्यक है। गोहिलवाड़ संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

माननीय संघप्रमुख श्री का बीकानेर प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 4 अगस्त को बीकानेर प्रवास पर रहे। प्रवास के दौरान श्री डूंगरगढ़ क्षेत्र के कितासर गांव में उनके सान्निध्य में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओ से चर्चा करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ पूरे समाज को पारिवारिक भाव में बांधने के लिए कार्य कर रहा है। हम सभी समाज रूपी इस विशाल परिवार के सदस्य हैं और उस रूप में अपने कर्त्तव्य की पूर्ति हमें किस प्रकार करनी चाहिए, इसका मार्ग संघ हमें बताता है। ऐसे मिलन कार्यक्रमों का आयोजन हमारे पारस्परिक स्नेहभाव को मजबूत बनाता है। उन्होंने सभी को पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह हेतु दिल्ली आने का निमंत्रण भी दिया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने संघ की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। इसके पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री बीकानेर पहुंचे जहां उनके सान्निध्य में

डाउनटाउन मैरिज गार्डन में एक बैठक रखी गई जिसमें उन्होंने 30 जुलाई को बीकानेर में आयोजित पूज्य नारायण सिंह रेडा जयंती समारोह में सहयोग करने वाले समाजबंधुओ से भेंट की। संघप्रमुख श्री ने सभी के सहयोग के लिए आभार प्रकट किया एवं निरंतर मिलते रहने व आपसी घनिष्ठता को बढ़ाने की बात कही। प्रवास के दौरान माननीय संघप्रमुख श्री बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन भी पहुंचे। यहां संघप्रमुख श्री द्वारा सहयोगियों के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया गया।

राजस्थान राजपूत परिषद अहमदाबाद की कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

अहमदाबाद में निवासरत राजस्थान के प्रवासी राजपूत बंधुओं की संस्था राजस्थान राजपूत परिषद अहमदाबाद की कार्यकारिणी की बैठक श्री बालाजी अगोरा मॉल, सरदार पटेल रोड, अहमदाबाद में 30 जुलाई को आयोजित हुई। बैठक में विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई, साथ ही संस्था द्वारा आयोजित होने वाले आगामी कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त संपर्क के उद्देश्य से संघ के स्वयंसेवकों का एक दल भी बैठक में सम्मिलित हुए। संघ के प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने सभी को जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी देते हुए अधिकाधिक संख्या में मुख्य समारोह में सम्मिलित होने का निवेदन किया। संघ के वागड़ प्रांत से गुमान सिंह वालाई व लाखन सिंह लांबापारडा भी सहयोगियों सहित बैठक में सम्मिलित हुए। सभी उपस्थित सदस्यों ने दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी कार्यक्रम में सम्मिलित होने की बात कही।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org